उनहत्तर में द्वीप प्रशासन द्वारा दक्षिण अंडमान के 'स्ट्रेट द्वीप' में बसा दिया गया। जहां इनके लिए चिकित्सा, शिक्षा, आवास और राशन आदि के अलावा अन्य जरूरी सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही है। पर आदिम युग में रहते आए इस आदिम जनजाति के लोगों में जैसे ही आधुनिक युग में कदम रखा, इनका अस्तित्व ही जैसे दांव पर लग गया। समय के साथ इनकी आबादी घटती चली गई। अट्ठारह सौ अठ्ठावन में जहां इनकी आबादी साढ़े तीन से पांच हजार के बीच आंकी गई थी, वहीं ये मात्र 50 के लगभग ही रह गए हैं।

2. ओंगी :– ओंगी आदिम जनजाति लोगों का निवास लिटिल अंडमान में रहा। 1825 और इसके बाद कई बार इस कबीले और अंग्रेजों के बीच खूनी भिडंत हुई। बाद में मैत्री सम्पर्क अभियानों के चलते ये बाहरी लोगों से हाथ मिलाने को राजी हो गए। प्रशासन ने उन्हें लिटिल अंडमान के डूगोंग क्रीक और साऊथ बे में बसा दिया। पर आधुनिकता की मुख्यधारा में आने के बाद इनकी संख्या में भी गिरावट आती गई। 1901 में जहां ये पौने सात सौ के लगभग थे, वहीं इनकी तादाद आज 100 के आस–पास है।

3. जारवा :– दक्षिण अंडमान में इसके पूर्वी तटीय इलाकों में किसी समय रहने वाली इस आदिम जनजाति के कबीलों की बोली और परम्पराएं ग्रेट अंडमानी आदिम जनजातियों के कबीलों से भिन्न थीं इसलिए दोनों कबीलों का आपस में भी मेल नहीं रहा है। अंग्रेजों द्वारा 1858 में अंडमान मे स्थापित सेटलमेंट के विस्तार के साथ ही ग्रेट अंडमानियों के विदेशियों से बढ़ते मेलजोल ने उन्हें अलग स्थानों में चले जाने के लिए मजबूर कर दिया। ग्रेट अंडमानियों के अंग्रेजों से मित्रता स्वरूप आ मिलने के बावजूद जारवाओं ने अंग्रेजों के प्रति शत्रुतापूर्ण रवैया अपनाए रखा। आज़ादी के बाद मैत्री सम्पर्क अभियानों के चलते अंततः 1974 में ही इस